पाठ 5

मेरी माँ

(प्रस्तुत पाठ में अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' ने अपनी माँ के प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त की है।)

ग्यारह वर्ष की उम्र में माता जी विवाह कर शाहजहाँपुर आयी थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद ही दादी जी ने अपनी छोटी बहिन को बुला लिया। उन्हीं ने गृह-कार्य में माता जी को शिक्षा दी। थोड़े ही दिनों में माता जी ने सब गृह-कार्य को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबन्ध करने लगीं। मेरे जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद आपने हिन्दी पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ने का शौक आपको खुद ही पैदा हुआ था। मोहल्ले की संग-सहेली जो घर पर आ जाती थीं, उन्हीं में जो कोई शिक्षित थीं, माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इसी प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता उसमें पढ़ना-लिखना करतीं। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वे देवनागरी पुस्तकों का अवलोकन करने लगीं। मेरी बहिनों को छोटी आयु में माता जी ही शिक्षा दिया करती थीं। जबसे मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, तब से माता जी से खूब वार्तालाप होता। यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं, तो मैं भी अति साधारण मनुष्य की भाँति संसार चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षा के अतिरिक्त क्रान्तिकारी जीवन में भी आपने मेरी वह सहायता की है, जो मेजिनी को उनकी माता ने की थी। यथा-समय मैं उन सारी बातों का उल्लेख करूँगा। माता जी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना। आपके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग भी करनी पड़ी थी। जन्मदात्री जननी, इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण-परिशोध करने के प्रयत्न करने

का भी अवसर न मिला; इस जन्म में तो क्या यदि अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने किस प्रकार अपनी दैवी वाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है। तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका। धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी। जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं उसका स्मरण कर तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का ध्यान आ जाता और मस्तक नत हो जाता है। तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई तो तुमने प्रेम-भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे वह करो, किन्तु ऐसा करना ठीक नहीं इसका परिणाम अच्छा न होगा। जीवनदात्री! आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मान्तर परमात्मा ऐसी ही माता दें। यही इच्छा है।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर न होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी सुनाते हुए मुझे सान्त्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन भर में कोई कष्ट न अनुभव किया। इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है। वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखायी देती। तुम्हें मेरी मृत्यु का दुखद संवाद सुनाया जायेगा। माँ मुझे विश्वास है, तुम यह समझकर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता- भारतमाता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारे कुल को कलंकित न किया; अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहा। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जायेगा, तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जायेगा। गुरु गोविन्द सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु का संवाद सुना था तो बहुत हर्षित हुईं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थीं। जन्मदात्री! वर दो कि अन्तिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।

- रामप्रसाद 'बिस्मिल'

भारत के अमर क्रान्तिकारियों में श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म 4 जून सन् 1897 ई0 को मैनपुरी में हुआ था। ब्रिटिश सरकार का विरोध करने पर 19 दिसम्बर सन् 1927 ई0 को इन्हें गोरखपुर जिला जेल में फाँसी दी गयी। क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ वे साहित्यिक रुचि के धनी, सफल रचनाकार थे। इन्होंने आत्मकथा, जीवनी, उपन्यास, समीक्षा, लेख, अनुवाद, कविता आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। इनकी प्रमुख रचनाएँ- 'निज जीवन की छटा' (आत्मकथा), 'मन की लहर' (कविता संकलन), 'बोलशेविकों की करतूत' (उपन्यास), 'केथोराइन' (जीवनी) आदि हैं।

शब्दार्थ

नितान्त=एकदम, बिल्कुल। **सदृश**=समान। **अक्षर-बोध**=वर्ण-ज्ञान। **अवलोकन**=देखना, निरीक्षण करना। **वार्तालाप**=बातचीत। **मेजिनी** = सन् 1805 ई0 में इटली में जन्मे महान देशभक्त व क्रान्तिकारी थे। **निर्वाह**=पूरा किया जाना, गुजारा। **जन्मदात्री**=जन्म देने वाली। **परिशोध**=ऋण आदि का भुगतान, चुकता। **उऋण**=ऋण से मुक्त। **अवर्णनीय**=जो वर्णन करने योग्य न हो। **संलग्न**=चिपका हुआ, लगा हुआ। **श्रेय** = यश। **ताड़ना**=सुधार के उद्देश्य से मारना। **परिणाम**=फल। **सान्त्वना**=ढाढस बँधाना, तसल्ली। **तृष्णा**=अप्राप्त वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा, लोभ। **बलिवेदी की भेंट**=न्योछावर होना। **विचलित** = अस्थिर, चंचल।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के विचारों को पत्र-पत्रिकाओं से एकत्र कर संकलन बनाइए।

2. शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' के विषय में अपने पुस्तकालय से जानकारियाँ एकत्र कीजिए।

विचार और कल्पना

(1) अगर घर की माताएँ पढ़ी-लिखीं हो तो वे घर को कैसे स्वर्ग बना सकतीं हैं, अपने विचार लिखिए।

(2) पाठ मंे लेखक ने अपनी माँ के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। इसी आधार पर आप भी अपनी माँ के बारे में अपने विचार लिखिए।

पाठ से

1. नीचे दिये गये प्रश्नों में उत्तर के रूप में तीन विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प पर सही का निशान लगाइए-

अ. बिस्मिल की माँ का विवाह-

(क) ग्यारह वर्ष की अवस्था में हुआ था।

(ख) अठारह वर्ष की अवस्था में हुआ था।

(ग) बीस वर्ष की अवस्था में हुआ था।

ब. बिस्मिल के क्रान्तिकारी जीवन में उनकी माँ ने उनकी वैसी ही सहायता की, जैसे-

(क) भगत सिंह की उनकी माँ ने की थी।

(ख) चन्द्रशेखर आजाद की उनकी माँ ने की थी।

(ग) मेजिनी की उनकी माँ ने की थी।

स. बिस्मिल ने माता को धैर्य धारण करने के लिए कहा, क्योंकि उनका पुत्र-

(क) कायर का जीवन नहीं जीना चाहता था।

(ख) छिपकर नहीं रहना चाहता था।

(ग) भारतमाता की सेवा में प्राणों की बलि चढ़ाना चाहता था।

2. बिस्मिल की माँ ने पढ़ना-लिखना कैसे सीखा?

3. रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने कहा था-''इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है .....।'' वह तृष्णा क्या थी ? लिखिए।

4. इस पाठ की किन-किन बातों ने आपको प्रभावित किया ? क्यों?

भाषा की बात

1. 'प्रबन्ध' में 'प्र', 'परिश्रम' में 'परि', 'अवलोकन' में 'अव', 'निर्वाह' में 'निर्' उपसर्ग लगे हैं। इन्हीं उपसर्गों की सहायता से तीन-तीन नये शब्द बनाइए।

2. 'अवर्णनीय' में 'ईय' और 'धार्मिक' में 'इक' प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों की सहायता से चार-चार नये शब्द बनाइए।

3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए-

परमात्मा, प्रत्येक, भोजनादि, सदैव।

4. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध सूचित हो, उसे 'कारक' कहते हैं। कारकों के बोध के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हें व्याकरण में 'विभक्तियाँ' कहते हैं। इन्हें 'परसर्ग' भी कहते हैं। हिन्दी कारकों की विभक्तियों के चिह्न इस प्रकार हैं- ने, को, से (के द्वारा), के लिए, से (अलग

होने के अर्थ में) का, के, की, रा, रे, री, में (पर)। अब आप कोष्ठक में दिये गये कारक चिह्नों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- (के, ने, को, की, में, से, के लिए।)

(क) शाहजहाँपुर आने ..... थोड़े दिनों के बाद दादी जी .....अपनी छोटी बहन ..... बुला लिया।

(ख) तुम्हारी दया ..... छाया ..... मैंने अपने जीवनभर..... कोई कष्ट न अनुभव किया।

(ग) तुम्हारी दया ..... ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका।

(घ) आप .... आदेश ..... पूर्ति करने ..... मुझे अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी।

5. कर्ता, कर्म, क्रिया- यह हिन्दी वाक्य रचना का सामान्य पद क्रम है, जैसेः राम ने पुस्तक पढ़ी। कभी-कभी यह सामान्य पदक्रम बदल दिया जाता है जो सही नहीं है। जैसे-

(क) पुस्तक राम ने पढ़ी।

(ख) पढ़ी राम ने पुस्तक।

(ग) राम ने पढ़ी पुस्तक।

नीचे दिये गये वाक्यों को सही पदक्रम में लिखिए-

(क) बुला लिया अपनी छोटी बहिन को दादी ने।

(ख) अवलोकन करने लगी देवनागरी पुस्तकों का।

(ग) भंग करनी पड़ी थी मुझे अपनी प्रतिज्ञा।

(घ) ध्यान आ जाता तुम्हारी स्वर्गीय मूर्ति का मुझे।

6. ग्यारह वर्ष की उम्र में, मेरे जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद, मेरी बहनों की छोटी आयु में, केवल एक तृष्णा है आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दो तो पता चलेगा कि इनमें 'ग्यारह', 'पाँच', 'छोटी आयु', 'केवल एक' शब्द से संख्या या परिमाण का बोध या आभास होता है, क्योंकि ये संख्या वाचक विशेषण हैं। इनमें 'ग्यारह', 'पाँच', 'सात' तथा 'एक' से निश्चित संख्या का बोध होता है, इसलिए इनको निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। 'छोटी आयु' से अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

अब आप नीचे लिखे वाक्यों को पढ़कर उनके विशेषण के भेदों को लिखिए-

(क) सभी सदस्य खा रहे हैं। (ख) कुछ लोग टहल रहे हैं।

(ग) मुझे दो दर्जन केले दे दो। (घ) मैंने पचास रुपये का आम खरीदा।

7. इस पाठ की जिन बातों से आप प्रभावित हुए हों उन्हें अपनी कॉपी पर लिखिए।

इसे भी जानें

"सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,

देखना है ज़ोर कितना बाज़ु-ए-कातिल में है।"

-रामप्रसाद 'बिस्मिल'